आज की मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ ---------- Date:02-12-14

हम बच्चों को याद की यात्रा सिखलाकर मास्टर सर्वशक्तिमान, सम्पूर्ण पवित्र सतोप्रधान आत्मा बनाने वाले, सर्वशक्तिमान बाप ने कहा, मीठे बच्चे - सर्वशक्तिमान बाप से बुद्धियोग लगाने से शक्ति मिलेगी, याद से ही आत्मा रुपी बैटरी चार्ज होती है, आत्मा पवित्र सतोप्रधान बन जाती है.

बाबा हर रोज मुरली में हमें दो बातों का ज्ञान जरूर देते है १. आत्मा-परमात्मा का ज्ञान २. सृष्टि चक्र के ड्रामा का ज्ञान.

बाबा हमें आत्मा-परमात्मा का ज्ञान इसलिए देते जिसे हम अपने को आत्मा समझ बाप को याद करें. बाबा हमें सृष्टि चक्र के ड्रामा का ज्ञान इसलिए देते है जिसे हम अपना स्वदर्शन-स्वचिंतन कर स्वपरीवर्तन करें.

बाबा की आज की मुरली से आत्मा-परमात्मा पर कहे गये कुछ पॉइन्टस -

- बाबा कहते है बच्चों को पहले-पहले एक ही बात समझने की है कि हम आत्माये सब भाई-भाई हैं और शिवबाबा सभी आत्माओं का बाप है. उन्हें सर्वशक्तिमान कहा जाता है. सर्वशक्तिमान बाप की याद से तुम अभी अपने में शक्ति भर रहे हो.

- बाबा कहते है अभी तुम सर्वशक्तिमान बाप से अपना बुद्धियोग लगाते हो, अपने में शक्ति भरते हो. तुम्हारी आत्मा बाप को याद करते-करते एकदम प्योर हो जाती है. बाप को याद करने से तुम्हारी आत्मा फिर से भरपूर हो जाती है.

- बाबा समझाते है अभी तुमको एक बाप को ही याद करना है. ऊंच ते ऊंच है भगवंत. क्रियेटर तो एक ही बेहद का बाप है, बाकी सब है रचना. अभी तुम बच्चों के दिल में है कि बाबा हमारे लिए स्वर्ग नई दुनिया स्थापन कर रहे हैं.

- बाबा कहते है मैं तो एवर पवित्र हूँ. मैं कभी गर्भ से जन्म नहीं लेता हूँ. मैं तो जब यह (ब्रह्माबाबा) ६० वर्ष की वानप्रस्थ अवस्था में होता है तब इनके तन में प्रवेश करता हूँ.

- बाबा कहते है मैं इस मनुष्य आत्माओं के झाड़ का बीजरुप हूँ. इस झाड़ की उत्पती, पालना और विनाश की सारी नॉलेज मेरे ही पास है. मेरे सिवाय इसकी नॉलेज किसी के पास नहीं. मैं स्वयं आकर तुम्हें इस झाड़ की सारी नॉलेज देता हूँ.

- बाबा कहते है तुम जानते हो की भगवान किसी देहधारी मनुष्य को नहीं कहा जाता. ब्रह्मा-विष्णु-शंकर को भी अपनी सूक्ष्म देह है इसलिए उन्हें भी भगवान नहीं कहेंगे. भगवान तो निराकार-अकालमूर्त बाप को ही कहा जाता हैं.

- बाप समझाते है यह भृकुटि ही मनुष्य आत्मा का अकालतख्त है. आत्मा में ही अच्छे वा बुरे संस्कार होते है तब तो कहते है यह कर्मों का फल है. सभी आत्माओं का बाप एक ही है.

<u>बाबा की आज की मुरली से सृष्टि चक्र के ड्रामा पर कहे गये कुछ पॉइन्टस</u> -

- बाबा कहते है तुम्हारी आत्मा में भी सर्वशक्तियाँ थी. तुम सारे विश्व पर राज्य करते थे. भारत में इन देवी-देवताओं का राज्य था, तुम ही पवित्र देवी-देवता थे. तुम्हारे कुल में सभी आत्माये निर्विकारी थे. अभी फिर से तुम निर्विकारी बन रहे हो.

- बाप ने समझाया है तुम्हारी आत्मा ही ८४ जन्मो का पार्ट बजाती है. तुम्हारी आत्मा में पहले सतोप्रधानता की ताकत थी, वह फिर दिन-प्रतिदिन कम होती जाती है. तुम जानते हो आत्मा को सतोप्रधान से तमोप्रधान बनना ही है. अभी बाप की याद से फिर से सतोप्रधान बन रही है.

- जब तुम्हारी आत्मा बाप की याद से पवित्र बन जाती है तो पहले शांतिधाम जायेगी. शांतिधाम (मूलवतन) में सभी आत्माये रहती है फिर आहिस्ते-आहिस्ते नीचे आती है तो वृद्धि होती जाती है. यह पार्टधारीयों की दुनिया है जो चारों युगों में फिरती है. सतयुग में पहले आत्माये देवता होती है फिर क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र बनती हैं. अभी यह है पुरुषोत्तम संगमयुग जब की बाप आते है और तुम्हें ब्राह्मण बनाते है. ज्ञानसागर बाप से नॉलेज ग्रहण कर तुम ब्राह्मण से देवता बनते हो. ऐसे यह चक्र फिरता ही रहता हैं.

ॐ शांति.